नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव पास बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक एवं परिवर्तित पाठ्यक्रम पर आधारित है।

पास बुक्स में नं. 1

संजीव®
पास बुक्स

संस्कृत-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी पूर्णतः नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड मॉडल पेपर 2022-23 एवं बोर्ड पेपर 2023 के प्रश्नों का अन्दर समावेश
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2024

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 380/-

- प्रकाशक :

  संजीव प्रकाशन

  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

  जयपुर-3

  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- लेजर कम्पोजिंग :

  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

  आधुनिक बुक बाईन्डर, जयपुर

  ****

❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।

❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर द्वारा बोर्ड की website पर जून, 2023 में जारी नवीन परिवर्तित पाठ्यक्रम

संस्कृत साहित्य–कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

एकम्-प्रश्नपत्रम्

अवधि : सपादहोरात्रयम् 3¼ **पूर्णांकाः 80**

क्र.सं.	अधिगम-क्षेत्रम्	अङ्काः
1.	पठित-अवबोधनम्	30
2.	संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः	10
3.	छन्दोऽलङ्काराः	10
4.	अपठित-अवबोधनम्	8
5.	रचनात्मककार्यम्	10
6.	व्याकरणम्	12

1. पठित-अवबोधनम्– **30**

1. पाठ्यपुस्तकात् बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः (अष्टौ प्रश्नाः) 1×8=8
2. अंशत्रयम्—(एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः च) 4+4+4=12

   प्रश्न-वैविध्यम्—

   (क) एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्) $^1/_2$×2=1

   (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) 1

   (ग) भाषिककार्यम् (बहुविकल्पात्मकप्रश्नचतुष्ट्यम्) $^1/_2$×4=2

   (i) विशेषण-विशेष्यचयनम्।

   (ii) कर्तृक्रियापदचयनम्।

   (iii) सर्वनामसंज्ञाप्रयोगः।

   (iv) पर्याय-विलोमपदचयनम्।
3. पाठप्रसङ्गानुसारं शब्दार्थलेखनम् (चतुश्शब्दानाम्) $^1/_2$×4=2
4. कथनानि आश्रित्य प्रश्ननिर्माणम् (चतुर्णाम्) 1×4=4
5. हिन्दीभाषायां सप्रसङ्गं भावार्थलेखनम् (एकस्य वाक्यस्य पद्यांशस्य वा) 2
6. अन्वयलेखनम् (एकस्य पद्यस्य) 1×2=2

2. संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः– **10**

(अ) प्राचीन-संस्कृतसाहित्येतिहासः (अतिलघूत्तरात्मकपञ्चप्रश्नाः) 1×5=5

(ब) आधुनिक-संस्कृत-साहित्यस्य परिचयः (अतिलघूत्तरात्मकपञ्चप्रश्नाः) 1×5=5

3. छन्दोऽलङ्काराः **5+5=10**

(क) छन्द-परिचयः– **5**

(i) लघुगुरुविवेकः, छन्दसः सामान्यज्ञानम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्:) 1×1=1

(ii) अधोलिखितछन्दसां सोदाहरणं लक्षणम्– 2

(द्वयोः एकस्य)

अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका, वंशस्थ,
मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्।

(iii) पद्यांशेषु गणचिन्हपूर्वकम् छन्दज्ञानम् (द्वयोः एकस्य) 2

(ख) अलङ्काराः– **5**

1. अधोलिखित-अलङ्काराणाम् उदाहरणसहितलक्षणज्ञानम्—(त्रिषु द्वयोः) $1^1/_2$×2=3

(i) शब्दालङ्काराः–अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः

(ii) अर्थालङ्काराः–उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यासः, अन्योक्तिः, व्याजस्तुतिः, दृष्टान्तः, अतिशयोक्तिः।

2. (i) पद्यांशेषु अलङ्कारस्य नामोल्लेखम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्) 1×1=1

(ii) कस्यापि अलङ्कारस्य सामान्य लक्षणज्ञानम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्) 1

4. अपठित-अवबोधनम्– **8**

80-100 शब्दपरिमितः एकः सरलः अपठितः गद्यांशः

(सम्पादितः सरलः साहित्यिकः अंशः)

प्रश्नवैविध्यम्–

(i) एकपदेन-उत्तरम् (प्रश्नचतुष्ट्यम्) $^1/_2$×4=2

(ii) पूर्णवाक्येन-उत्तरम् (प्रश्नत्रयम्) 1+1+1=3

(iii) **भाषा-सम्बद्धकार्यम् (प्रश्नचतुष्ट्यम्)** $^1/_2$×4=2

(क) कर्तृ-क्रियापदचयनम्

(ख) विशेषण-विशेष्य-प्रयोगः

(ग) सर्वनामप्रयोगः/संज्ञाप्रयोगः

(घ) शब्दार्थचयनम्/विलोमचयनम्

(iv) समुचितशीर्षकप्रदानम् 1

5. रचनात्मककार्यम्– **10**

(i) कमपि विषयं स्वीकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृतभाषायां लघुनिबन्धलेखनम् 5

(ii) हिन्दीभाषायां लिखितानां पञ्चवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादः 5

6. व्याकरणम्– **12**

(**प्रश्नाः**–बहुचयनात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मकाः प्रश्नाः च)

(i) स्वरसन्धिः, व्यञ्जनसन्धिः (प्रमुख सूत्राणि उदाहरणानि च लघुसिद्धान्तकौमुद्यानुसारम्) 04

(ii) कारकाणि—उपपदविभक्तीनां सूत्रसहितं ज्ञानम् 04

(iii) प्रत्ययाः—तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, मतुप्, इनि, ठक्, त्व, तल्, टाप्, ङीष्।

(क) प्रकृति-प्रत्ययसंयोगं 2

(ख) प्रकृति-प्रत्ययविभागम्। 2

निर्धारितपुस्तकानि–

शाश्वती (भाग 2) (राष्ट्रिय-शैक्षिक-अनु. एवं प्रशिक्षण परिषदा प्रकाशितम्)

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

1. पठित अवबोधनम्

शाश्वती (द्वितीयो भागः)

मङ्गलम्		1-2
प्रथमः पाठः	विद्ययाऽमृतमश्नुते	2-15
द्वितीयः पाठः	रघुकौत्ससंवादः	15-40
तृतीयः पाठः	बालकौतुकम्	41-60
चतुर्थः पाठः	कर्मगौरवम्	60-76
पञ्चमः पाठः	शुकनासोपदेशः	77-93
षष्ठः पाठः	सूक्ति-सुधा	93-111
सप्तमः पाठः	विक्रमस्यौदार्यम्	111-125
अष्टमः पाठः	कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्	126-134
नवम्ः पाठः	दीनबन्धुः श्रीनायारः	134-144
दशमः पाठः	योगस्य वैशिष्ट्यम्	145-163
एकादशः पाठः	कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्	163-172

2. संस्कृत-साहित्य का इतिहास

(अ) प्राचीन संस्कृत-साहित्य का इतिहास	173-201
(ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	202-210

अभ्यासार्थ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर–

(अ) प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास 210–229

(ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास 229–232

3. छन्दोऽलंकार-परिचयः

(क) छन्द : परिचय 233–248

(ख) अलंकार–परिचयः 248–259

4. अपठित-अवबोधनम्

80–100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः 260–278

5. रचनात्मक-कार्यम्

(i) लघु निबन्ध–लेखनम् 279–285

(ii) अनुवाद–कार्यम् 285–302

6. व्याकरणम्

(i) सन्धिप्रकरणम् 305–329

(ii) कारकाणि 329–354

(iii) प्रत्ययाः (प्रकृति–प्रत्ययसंयोगं विभागञ्च) 355–378

❑❑❑

ये हम नहीं कहते,

जमाना कहता है

संजीव पास बुक्स है नं. 1

दैनिक नवज्योति
जयपुर, 6 जुलाई, 2022

राजस्थान का प्रमुख दैनिक

विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय संजीव पास बुक्स

जयपुर। लम्बे समय से संजीव पास बुक्स अपनी उच्च गुणवत्तायुक्त पाठ्यसामग्री, नवीनतम घटनाक्रम, प्रमाणित आँकड़ों तथा सरल भाषा के कारण विद्यार्थियों में सर्वाधिक लोकप्रिय बनी हुई है। लाखों विद्यार्थी संजीव पास बुक्स से अध्ययन कर सफलता अर्जित कर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि स्कूल स्तर के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 3 से 9 के लिए संजीव आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव पास बुक्स, अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 5 से 8 के लिए संजीव रिफ्रेशर आल इन वन, कक्षा 9 से 12 के लिए अलग-अलग विषय पर संजीव रिफ्रेशर प्रकाशित की जाती हैं। इनके अलावा अंग्रेजी विषय को आसानी से समझने के लिए कक्षा 6 से 12 के लिए संजीव इंग्लिश कोर्स तथा विज्ञान के विद्यार्थियों की सुविधा के लिए कक्षा 11 एवं 12 के लिए उच्चस्तरीय संजीव साइन्स की पाठ्यपुस्तकें भी प्रकाशित की जाती हैं। कॉलेज स्तर पर भी राजस्थान के सभी प्रमुख विश्वविद्यालयों यथा—राजस्थान, भरतपुर, अलवर, सीकर, अजमेर, बीकानेर, कोटा एवं जोधपुर विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमानुसार प्रथम वर्ष से एम.ए. तक के लिए संजीव पास बुक्स प्रकाशित की जाती हैं। संजीव पास बुक्स की लोकप्रियता के बारे में विद्यार्थियों से बात करने पर उन्होंने बताया कि इसमें उन्हें सरल भाषा में पूरा पाठ्यक्रम, पर्याप्त संख्या में प्रश्न-उत्तर, प्रमाणित आँकड़े, नवीनतम जानकारी उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। इसीलिये सभी विद्यार्थी सहायक पुस्तकों के रूप में संजीव पास बुक्स को ही खरीदना पसन्द करते हैं। संजीव प्रकाशन के निदेशक प्रदीप मित्तल एवं मनोज मित्तल के अनुसार संजीव पास बुक्स सहित अन्य सभी पुस्तकें पूर्णत: नवीनतम पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार तैयार कराई जाती हैं। प्रत्येक विषय की पुस्तक को योग्य तथा अनुभवी विशेषज्ञ प्राध्यापकों से लिखवाया जाता है। इन्हें समय-समय पर पूर्णत: संशोधित तथा अपडेट भी कराया जाता है। इससे सहायक पुस्तकों के रूप में विद्यार्थियों के लिए ये बहुत उपयोगी हो जाती हैं। इन्हीं कारणों से संजीव प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संजीव पास बुक्स, संजीव इंग्लिश कोर्स, संजीव साइंस पाठ्यपुस्तकें, संजीव रिफ्रेशर आदि पुस्तकें कक्षा 3 से एम.ए. तक के विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय हैं।

संजीव पास बुक्स कक्षा 3 से एम. ए. के लिए

प्रकाशक–संजीव प्रकाशन, जयपुर-3

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2023

संस्कृत साहित्यम्

समय : : 3 घण्टे 15 मिनट (समाद त्रिवादनम्) **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थिभ्य: सामान्य निर्देशा:

1. परीक्षार्थिभि: सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामांक: अनिवार्यत: लेख्य:।
2. सर्वे प्रश्ना: अनिवार्या:।
3. प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरम् उत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
4. प्रत्येकं प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

(खण्ड-अ)

1. अधोलिखित प्रश्नानाम् उचितं विकल्पं चिनुत—

(i) चातकोऽपि कं न याचते? 1

(अ) राजानम् (ब) ग्रीष्मघनम् (स) शरद्घनम् (द) वर्षतुघनम्

(ii) अधिकार: ते कुत्र वर्तते? 1

(अ) धर्मे (ब) कर्मणि (स) चलने (द) जन्मनि

(iii) केषाम् उपदेष्टार: विरला: सन्ति? 1

(अ) धनिकानाम् (ब) मन्त्रिणाम् (स) निर्धनानाम् (द) राज्ञाम्

(iv) अपण्डितानां विभूषणं किम्? 1

(अ) वाक्पटुता (ब) अधैर्यम् (स) मौनम् (द) युद्धनिपुणता

(v) पर्वता: कति सन्ति? 1

(अ) सप्त (ब) अष्ट (स) चत्वार: (द) षड्

(vi) नीडेषु के प्रतिनिवर्तन्ते? 1

(अ) चटका: (ब) कलविङ्का: (स) कपोता: (द) मयूरा:

(vii) मम पूर्वतनं पत्रं त्वया प्राप्तं स्यात्। अत्र कर्तृपदं किम्? 1

(अ) मम (ब) पत्रम् (स) प्राप्तम् (द) त्वया

(viii) अवधीरयन्त: खेदयन्ति <u>हितोपदेशदायिनो</u> गुरून्। रेखाङ्कितपदस्य विशेष्यपदं किम्? 1

(अ) खेदयन्ति (ब) अवधीरयन्त: (स) गुरून् (द) न किमपि

(ix) तदानीमेव तस्य कार्यालय लिपिक: श्रीदास: प्रविशति। अत्र तस्य इतिपदस्य संज्ञा पदं किम्? 1

(अ) डॉ. नारायणस्य (ब) श्रीनायारस्य (स) श्रीदासस्य (द) श्री चन्द्रशेखरस्य

(x) ननु <u>मूर्खा:</u>। पठितमेव युष्माभिरपि तत्काण्डम्। रेखाङ्कितपदस्य उचितं विलोम पदं किम्? 1

(अ) विदुष: (ब) विद्वांस: (स) विद्वान् (द) विद्वस:

(xi) ''भू-विभागा:'' इति पाठ: कस्मात् ग्रन्थात् सङ्कलित:? 1

(अ) समुद्रसङ्गमात् (ब) वेदविज्ञानात् (स) शिवराज्योदयात् (द) तर्कसङ्ग्रहात्

(xii) किं नाम विस्फुरन्ति शस्त्राणि? इति वाक्यं क: कथयति? 1

(अ) अरुन्धती (ब) कौसल्या (स) लव: (द) जनक:

2. अधोलिखित पदयो: रिक्तस्थानानि पूरयत—

(क) प्रकृति प्रत्ययो: संयोगं कुरुत—

(i) यद्रत्नं रत्नाभरणादिकं सूते तद् .... । (ग्रह्+ण्यत्) 1

(ii) अयि जात! .... कथय। (कथ्+तव्यत्) 1

(ख) प्रकृति प्रत्ययो: विभागं कुरूत—

(i) वाग्भूषणं .... । (भूषणम्) 1

(ii) श्रीकृष्णेन अत्र ज्ञान भक्तिकर्मणां समन्वय: ....। (प्रस्तुत:) 1

(ग) उचितं विभक्ति प्रयोगं कुरूत—

(i) .... बहि: सरोवर: शोभते। (ग्राम) 1

(ii) जननी .... गच्छति। (कार्यालय) 1

3. (क) अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत–

(i) ऋतुसंहारस्य लेखकः कः? 1

(ii) "ज्ञानकाण्डम्" इति अस्य नामान्तरं किम्? 1

(iii) भवभूतेः करुणरस प्रधाना रचना का? 1

(iv) श्रीमद्भगवद्गीतायां कति श्लोकाः सन्ति? 1

(v) बाणभट्टस्य प्रथमगद्यकृतिः का? 1

(vi) 'आधुनिक बाणः' कः कथ्यते? 1

(vii) 'पाषाणीकन्या' कथासङ्ग्रहस्य अनुवादकः कः? 1

(viii) 'विद्योदय' नाम संस्कृत पत्रिकायाः सम्पादकः कः आसीत्? 1

(ix) 'जयपुर वैभवम्' इति ग्रन्थस्य रचनाकारस्य नाम किम्? 1

(x) 'कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्' इति प्रसिद्ध वाक्यं कस्मिन् ग्रन्थे उल्लिखितम् अस्ति? 1

(ख) अधोलिखितेषु रेखाङ्कित शब्दयोः सूत्रोल्लेखपूर्वकं विभक्ति निर्देशं कुरूत—

(i) भक्तः <u>हरिं</u> भजति। 1

(ii) <u>नमः</u> ते। 1

खण्ड-ब

4. अधोलिखित छन्दसोः कस्यचिद् एकस्य लक्षणम् उदाहरणं च लिखत— 2

(i) वसन्ततिलका (ii) उपेन्द्रवज्रा

5. अधोलिखित—पद्यांशयोः कस्यचिद् एकस्य गणचिह्नं प्रदर्शयन् छन्दसः नामोल्लेखं कुरूत— 2

(i) स्वभाव एवैष परोप कारिणाम्।

(ii) मनो में संमोह स्थिर मपि हरत्येष बलवान्।

6. अधोलिखितयोः अलङ्कारयो कस्यचिद् एकस्य लक्षणम् उदाहरणं च लिखत— 2

(i) अनुप्रासः (ii) उत्प्रेक्षा

7. अधोलिखित-पद्यांशयोः कस्मिश्चिद् एकस्मिन् अलङ्कारस्य नामोल्लेखं कुरूत— 2

(i) अनलङ्कृतशरीरोऽपि चन्द्रमुख आनन्दयति मम हृदयम्।

(ii) उच्छलद् भूरि कीलालः शुशुभे वाहिनीपतिः।

8. अधोलिखित प्रश्नयोः उत्तरे लिखत— 2

(i) मगणस्य गणं चिह्नं किम्?

(ii) सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जनसंहतेः क्रमेण आवृत्तिः कस्मिन् अलङ्कारे भवति?

9. अधोलिखित पद्ययोः कस्यचिद् एकस्य अन्वयं लिखत— 2

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
सः यत्प्रमाणं कुरूते लोकस्तदनु वर्तते॥

अथवा

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम्॥

10. अधोलिखित शब्दानाम् अर्थं लिखत— $^1/_2 \times 4 = 2$

(i) नीरजम् (ii) दैष्टिकताम् (iii) कौतुकम् (iv) प्राज्ञः

11. अधोलिखित पदयोः सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिविच्छेदं कुरूत— 2

(i) वागीशः (ii) हरिं वन्दे

12. अधोलिखित पदयोः सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिं कुरूत— 2

(i) होतृ + ऋकारः (ii) प्र + एजते

अधोलिखितम् अपठितं गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

सङ्घटन द्वारा किं न भवति? किमस्ति दुष्करं कर्म यत् सङ्घटनशक्त्या सुकरं न जायते? अस्माकं पूर्वज्ञानां सङ्घटन-सम्बन्धिन्यो गौरवगाथाः सम्पूर्णविश्वस्य पुनरावृत्तपृष्ठेषु सुवर्णाक्षरैरंकिताः सन्ति। पुनः किमघ कारणं यद् वयं स्वकीयां महतीं शक्तिं विस्मृतिगर्ते निपात्य अकर्मण्य भूत्वा तिष्ठामो निजं दिष्टं च दुष्टं घोषयन्तः शपामहे।

दिनेष्वेषु सङ्घटनशक्ते: फलं प्रत्यक्षमपि विलोक्यतेऽत्र यदिदानीं लोका असम्भवमपि कार्यं सम्भवं कुर्वन्त: सङ्घटनस्य माहात्म्यं चरितार्थयिष्यन्ति। वस्तुत: सङ्घटने एव शक्तिनिवास:। अपूर्णतामपि पूरयति इदम्।

प्रश्ना:

13. एकपदेन उत्तरत— 2

(i) दुष्कर मपि कर्म कया सुकरं जायते?

(ii) कुत्र शक्ति निवास: विद्यते?

14. पूर्णवाक्येन उत्तरत— 2

(i) एषु दिनेषु सङ्घटनशक्ते: फलं कथं विलोक्यते?

(ii) अस्माकं गौरवगाथा: कीदृशै: अक्षरै: अङ्किता: सन्ति?

15. भाषा-सम्बद्धकार्यम्— 2

(i) 'विलोक्यते' इति क्रिया: कर्तृपदं किम्?

(ii) 'दिनेषु एषु' अत्र विशेषण्यपदं किम्?

(iii) किमस्ति दुष्करं कर्म यत् सङ्घटनशक्त्या सुकरं न जायते। अत्र सर्वनाम पदं किम्?

(iv) अपूर्णतामपि पूरयति इदम्। अत्र अपूर्ण इति पदस्य विलोम पदं किम्?

16. उपर्युक्त गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। 2

खण्ड-स

17. अधोलिखितेषु कयोश्चिद् द्वयो: सप्रसङ्ग हिन्दीभाषया भावार्थं लिखत— 3

(i) लक्ष्मी: स्वयं वाञ्छति वासहेतो:।

(ii) वसुधैव कुटुम्बकम्।

(iii) सततं वाग्भूषणम् भूषणम्।

(iv) प्रत्यक्षानुमानागमा: प्रमाणानि।

18. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नाम् उत्तराणि यथा निर्देशं लिखत— 3

एवं चतुर्णां परस्परं विवादो लग्न:। ततो ब्राह्मणो राजसमीपमागत्य चतुर्णां विवाद वृत्तान्तम कथयत्। राजापि तच्छ्रुत्वा तस्मै ब्राह्मणाय चत्वार्यपि रत्नानि ददौ। इति कथां कथयित्वा पुत्तलिका राजान मवदत्, भो राजन् त्वय्येवंविध-सहज मौदार्यं विद्यते चेदस्मिन् सिंहासने समुपविश।

प्रश्ना:

(i) चतुर्णां कथं विवादो लग्न:? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) पुत्तलिका राजानं किमवदत्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) राजापि तच्छ्रुत्वा तस्मै ब्राह्मणाय चत्वार्यपि रत्नानि ददौ। 'ददौ'। इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?

अथवा

अहं देशसेवां कर्तुं गृहाद् बहिरभवम्। मया निश्चितमासीत् 'एतावन्ति दिनानि स्वोदर सेवायै क्लिष्टोऽभवम्। इदानीं कियन्तं कालं देशसेवायामपि लक्ष्यं ददामि।' यथैवाहं मार्गेऽग्रेसरो भवामि, तथैव मम बाल्याध्यापक महोदय: सम्मुखोऽभवत्।

प्रश्ना:

(i) लेखक: कुत्र अग्रेसर: भवति? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) क: लेखकस्य सम्मुखें अभवत्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) <u>अहं</u> देश सेवां कर्तुं गृहाद् बहिर भवम् वाक्येऽस्मिन रेखाङ्कितपदस्य क्रियापदं किम्?

19. निम्नलिखितं पद्यं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानामुत्तराणि यथानिर्देशं लिखत— 3

नीरक्षीर विवेके हंसालस्यं त्वमेव तनुषे चेत्।
विश्वस्मिन्नधुनान्य: कुलव्रतं पालयिष्यति क:॥

प्रश्ना:

(i) नीरक्षीर विवेक गुणी क: वर्तते? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) हंस: कुत्र कुलव्रतं पालयति? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) त्वम् इति कर्तृ पदस्य क्रियापदं किम्?

अथवा

नियतं कुरू कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मण:॥

प्रश्ना:

(i) अकर्मण: किं न सिद्ध्येत्? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) कर्म कथं करणीयम्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) 'नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:' अत्र क्रियापदं किम्?

20. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा एतदाधारित प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत— 3

कौसल्या : जात! अस्ति ते माता? स्मरसि वा तातम्?

लव: : नहि।

कौसल्या : तत: कस्य त्वम्?

लव: : भगवत: सुगृहीतनाम धेयस्य वाल्मीके:।

कौसल्या : अयि जात! कथयितव्यं कथय।

लव: : एतावदेव जनामि।

प्रश्ना:

(i) 'स्मरसि वा तातम् इति कौसल्या कं वदति? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) मातु: नाम अनुक्ते सति कौसल्या लवं किं पृच्छति? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) अस्ति ते माता इत्यत्र कर्तृपदं किम् लिखत?

अथवा

छात्रा: : नमोनम: आचार्य! स्वागतम् अत्र भवतां कक्षायाम्।

योगाचार्य: : छात्रा:! भवन्त: सम्प्रति समुत्सुका: दृश्यन्ते। काऽपि विशिष्टा जिज्ञासा अस्ति किम्?

सागर: : भो आचार्य! वयं सर्वे योगस्य उपयोगिताया: विषये सम्यग्रूपेण ज्ञातुम् उत्सुका: स्म।

योगाचार्य: : प्रियच्छाया:! किं भवन्त: जानन्ति यत् योगशास्त्रे शरीरस्य मनस: च नियमनं प्रतिपादितं वर्तते। अस्य ज्ञानेन अभ्यासेन च भवन्त: स्वाध्यायेऽपि एकाग्रतां वर्धयितुं सक्षमा: भविष्यन्ति।

प्रश्ना:

(i) सागरस्य कथनानुसारं छात्रा: कस्य विषये ज्ञातु मुत्सुका: सन्ति? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) योगशास्त्रे कस्य नियमनं प्रतिपादितम्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) विशिष्टा जिज्ञासा अस्ति किम्? अत्र विशेष्यपदं किम्?

खण्ड-द

21. रेखाङ्कित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत—(केषाञ्चित् चतुर्णाम्) 4

(i) अतिजवेन दूरमतिक्रान्त: स: <u>चपल:</u> दृश्यते?

(ii) <u>उपार्जितानां वित्तानां</u> त्याग एव हि रक्षणम्।

(iii) तदानीमेव <u>तस्य</u> कार्यालय लिपिक: श्रीदास: प्रविशति।

(iv) तच्छ्रुवा <u>राजा</u> <u>तूष्णी</u>मासीत्?

(v) <u>मनुष्याणां</u> हिंसावृत्तिस्तु निरवधि:।

(vi) <u>अन्धकारेऽस्मिन्</u> यासि त्वमवश्यम्।

22. निम्नलिखित वाक्यानां संस्कृतानुवादं कुरुत (केषाञ्चित् चतुर्णाम्) 1×4=4

(i) उद्यान में भ्रमर गुञ्जन कर रहे हैं।

(ii) वृद्ध उपनेत्र से देखता है।

(iii) मेरी अध्ययन मे रुचि है।

(iv) चोर आरक्षक से डरता है।

(v) माली वृक्ष से पुष्प चुनता है।

(vi) मेरे विद्यालय का वातावरण मनोहर है।

23. अधोलिखितयो: कमपि विषयं अधिकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृतभाषायां निबन्धं लिखत— 4

परोपकार:

अथवा

संस्कृत भाषाया: महत्त्वम्

संस्कृत कक्षा-XII

1. पठित अवबोधनम्

शाश्वती (द्वितीयो भागः)

मङ्गलम्

(1)

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनुभि-
र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ 1॥

अन्वयः–देवाः ! (वयं) कर्णेभिः भद्रं श्रृणुयाम। अक्षभिः भद्रं पश्येम। स्थिरैः अङ्गैः तनुभिः तुष्टुवांसः देवहितं यदायुः व्यशेमहि॥

शब्दार्थ–देवाः = हे देवगण ! **कर्णेभिः** = कानों से। **भद्रम्** = कल्याणकारी। **श्रृणुयाम** = सुने। **अक्षभिः** = आँखों से। **पश्येम** = देखें। **स्थिरैः अङ्गैः** = स्थिर अंगों से। **तनुभिः** = शरीरों से। **देवहितम्** = दिव्य। **व्यशेमहि** = प्राप्त करें।

हिन्दी-अनुवाद–हे देवगण ! (हम) कानों से कल्याणकारी वचनों को सुनें। आँखों से कल्याणकारी दृश्य देखें। स्थिर अंगों वाले शरीरों से स्तुति करते हुये दिव्य आयु (शतायु) को प्राप्त करें।

(2)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ 2॥

अन्वयः–मधु वाता ऋतायते। सिन्धवः मधु क्षरन्ति। ओषधीः नः माध्वीः सन्तु।

शब्दार्थ–मधु = सुगन्धियुक्त। **वाताः** = वायु, हवा। **ऋतायते** = बहे। **सिन्धवः** = नदियाँ, सागर। **मधु** = मधुर जल को। **क्षरन्ति** = युक्त हो। **ओषधीः** = ओषधियाँ। **नः** = हमारे लिए। **माध्वीः** = मधुमय, अमृततुल्य। **सन्तु** = होवें।

हिन्दी-अनुवाद–सुगन्धियुक्त वायु बहे, हवा चले। नदियाँ मधुर जल से युक्त हों। ओषधियाँ हमारे लिए अमृततुल्य होवें।

(3)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ 3॥

अन्वयः–नक्तम् मधु (अस्तु), उत उषस मधुमत् (अस्तु), पार्थिवं रजः मधुमत् (अस्तु), द्यौः मधु अस्तु, पिता नः मधु अस्तु॥

शब्दार्थ–नक्तम् = रात्रि। **मधु** = मधुमय। **उषस** = उषाकाल, प्रातःकाल। **मधुमत्** = माधुर्य युक्त। **पार्थिवम्** = पृथ्वी की। **रजः** = धूलि। **द्यौः** = द्यु लोक। **पिता** = परमेश्वर। **नः** = हमारे लिए। **अस्तु** = होवे।

हिन्दी-अनुवाद–रात्रियाँ मधुमय हों, माधुर्य युक्त होवें। प्रातःकाल मधुर (सुप्रभात) हों। पृथिवी की धूलि भी मधुमय अर्थात् मधुर अन्न को प्रदान करने वाली होवे। द्यु लोक प्रकाशयुक्त होवे। वह परम पिता परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो।

(4)

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तुः नः ॥ 4॥

अन्वयः—वनस्पतिः नः मधुमान् (अस्तु), सूर्यः मधुमान् अस्तु, गावः नः माध्वीः भवन्तु॥

शब्दार्थ—वनस्पतिः = वनस्पतियाँ। **नः** = हमारे लिए। **मधुमान्** = मधुरता-युक्त। **गावः** = गायें। **माध्वीः** = मधुर। **भवन्तु** = होवें।

हिन्दी-अनुवाद—वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुरतायुक्त होवें, सूर्य मधुर होवे अर्थात् मधुर अन्नादि प्रदान करने वाला होवे। गायें हमारे लिए मधुर होवें अर्थात् हमें मधुर दूध देने वाली होवें।

प्रथमः पाठः

विद्ययाऽमृतमश्नुते

(विद्या द्वारा अमरता को प्राप्त करता है)

पाठ-सार

प्रस्तुत पाठ 'ईशावास्योपनिषत्' से संकलित है। 'ईशावास्यम्' पद से आरम्भ होने के कारण इसे ईशावास्योपनिषत् की संज्ञा दी गई है। यह उपनिषत् यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व संहिता का 40वाँ अध्याय है, जिसमें 18 मन्त्र हैं।

इस पाठ के प्रारम्भ में दो मन्त्रों में ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता को दर्शाते हुए, कर्त्तव्य भावना से कर्म करने एवं त्यागपूर्वक संसार के पदार्थों का उपयोग एवं संरक्षण करने का निर्देश दिया गया है। आत्मस्वरूप ईश्वर की व्यापकता को जो लोग स्वीकार नहीं करते हैं, उनके अज्ञान को तृतीय मन्त्र में दर्शाया है। चतुर्थ मन्त्र में चैतन्य स्वरूप, स्वयं प्रकाश एवं विभु सर्वव्यापक आत्म तत्त्व का निरूपण है। पञ्चम एवं षष्ठ मन्त्रों में अविद्या अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान एवं विद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान पर सूक्ष्म चिन्तन निहित है। अन्तिम मन्त्र व्यावहारिक ज्ञान से लौकिक अभ्युदय एवं अध्यात्मज्ञान से अमरता की प्राप्ति को बतलाता है।

इस पाठ्यांश से यह सन्देश मिलता है कि लौकिक एवं अध्यात्म विद्या एक-दूसरे की पूरक है तथा मानव जीवन की परिपूर्णता एवं सर्वाङ्गीण विकास में समान रूप से महत्त्व रखती है।

पद्यांशों/मन्त्रों का अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद एवं पठितावबोधनम्—

(1)

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥ 1॥

अन्वयः—जगत्यां यत् किञ्च जगत् इदम् सर्वं ईशावास्यं, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, कस्यस्विद् धनं मा गृधः।

शब्दार्थ—जगत्याम् = इस संसार में। **यत् किञ्च** = जो कुछ भी। **जगत्** = चराचर जगत् है। **इदम्** = यह। **सर्वम्** = सम्पूर्ण। **ईशा** = परब्रह्म परमेश्वर से। **आवास्यम्** = व्याप्त है, आच्छादित है। **तेन** = इसलिए। **त्यक्तेन** = त्यागपूर्वक अर्थात् आसक्ति रहित होकर। **भुञ्जीथाः** = उपभोग करो। **कस्यस्वित्** = किसी के। **धनम्** = धन की। **मा गृधः** = आकांक्षा मत करो, लालच मत करो।

हिन्दी अनुवाद—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चराचरात्मक जगत् दृष्टिगत हो रहा है, वह सम्पूर्ण ईश्वर से व्याप्त है। इसलिए त्यागवृत्ति से इसका सेवन करो तथा किसी के भी (स्वकीय या परकीय) धन की आकांक्षा मत करो, उसके लिए लोभ मत करो।

पठितावबोधनकार्यम्—

निर्देशः—उपर्युक्तमन्त्रं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानामुत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः—

(क) एकपदेन उत्तरत—

(i) इदं सर्वं केन आवास्यम्?

(ii) कया भावनया जगत् भुञ्जीत?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

किम् मा गृधः?

(ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत–)

(i) 'कस्यस्विद्' इत्यस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?

(अ) धनम् (ब) सर्वम् (स) जगत् (द) गृधः

(ii) 'जगत्' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किमस्ति?

(अ) भुञ्जीथा (ब) गृधः (स) आवास्यम् (द) ईशा

(iii) 'त्यक्तेन' इति संज्ञापदस्य सर्वनामपदं किम्?

(अ) इदम् (ब) तेन (स) सर्वम् (द) मा

(iv) 'संसारे' इत्यस्य पर्यायपदं मन्त्रात् चित्वा लिखत।

(अ) सर्वम् (ब) जगत् (स) ईशा (द) जगत्याम्

उत्तराणि—

(क) (i) ईशा (ईश्वरेण)। (ii) त्यागेन।

(ख) कस्यस्विद् धनं मा गृधः।

(ग) (i) (अ) (ii) (स) (iii) (ब) (iv) (द)।

(2)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ 2॥

अन्वयः–इह कर्माणि कुर्वन् एव शतं समाः जिजीविषेत् एवम् कर्म त्वयि नरे न लिप्यते, इतः अन्यथा न अस्ति।

शब्दार्थ–इह = इस संसार में। **कर्माणि** = कर्मों को। **कुर्वन्** = करते हुए। **एव** = ही। **शतम् समाः** = सौ वर्षों तक। **जिजीविषेत्** = जीने की इच्छा करनी चाहिए। **एवम्** = इस प्रकार (त्याग भाव से)। **कर्म** = किये जाने वाले कर्म। **त्वयि नरे** = तुझ मनुष्य में। **न लिप्यते** = लिप्त नहीं होंगे। **इतः** = इससे (भिन्न)। **अन्यथा** = अन्य कोई प्रकार अर्थात् मार्ग। **न अस्ति** = नहीं है।

हिन्दी अनुवाद–इस संसार में शास्त्रनियत कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार त्याग भाव से किये जाने वाले कर्म तुझ मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे। इससे भिन्न अन्य कोई प्रकार अर्थात् मार्ग नहीं है जिससे कि मानव कर्म के बन्धनों से मुक्त हो सके।

पठितावबोधनकार्यम्–

1. प्रश्नाः– **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर 2022-23)**

(i) नरे किं न लिप्यते? (एकपदेन उत्तरत)

(ii) किं कुर्वन् नरः शतं समाः जिजीविषेत्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(iii) 'वर्षाणि' इति पदस्य पद्यांशे पर्यायपदं किमस्ति?

उत्तराणि–(i) कर्म।

(ii) कर्माणि कुर्वन् नरः शतं समाः जिजीविषेत्।

(iii) समाः।

2. प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत—

(i) इह कानि कुर्वन् जिजीविषेत्?

(ii) किम् त्वयि न लिप्यते?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

नरः कानि कुर्वन् शतं समाः जिजीविषेत्?

(ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत–)

(i) 'समाः' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किमस्ति?
(अ) कर्माणि (ब) शतम् (स) कुर्वन (द) इह

(ii) 'कर्म' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं पद्यांशे किम्?
(अ) कुर्वन् (ब) अस्ति (स) जिजीविषेत् (द) लिप्यते

(iii) 'त्वयि' इति सर्वनामपदस्य संज्ञापदं किम्?
(अ) नरे (ब) कर्म (स) इह (द) संसारे

(iv) 'वर्षाणि' इत्यस्य पद्यांशात् पर्यायपदं चित्वा लिखत।
(अ) शतम् (ब) नान्यथा (स) समाः (द) नरे

उत्तराणि—

(क) (i) कर्माणि। (ii) कर्म।

(ख) नरः कर्माणि कुर्वन् शतं समाः जिजीविषेत्।

(ग) (i) (ब) (ii) (द) (iii) (अ) (iv) (स)।

(3)

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥ 3॥

अन्वयः–असुर्याः नाम लोकाः ते अन्धेन तमसा आवृताः, ये च के आत्महनः जनाः ते प्रेत्य तान् अभिगच्छन्ति।

शब्दार्थ–असुर्याः = असुरों के। **नाम** = प्रसिद्ध। **अन्धेन तमसा** = अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से। **आवृताः** = आच्छादित हैं। **ये के च** = जो कोई भी। **आत्महनः** = आत्महत्या करने वाले। **प्रेत्य** = मरकर। **तान्** = उन भयंकर लोकों को। **अभिगच्छन्ति** = बार-बार प्राप्त होते हैं।

हिन्दी अनुवाद–असुरों के जो प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियों वाले नरक रूप लोक हैं, वे सभी अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से आच्छादित हैं। संसार में जो कोई भी आत्मा की हत्या करने वाले मनुष्य हैं, वे सब मृत्यु के उपरान्त उन्हीं भयंकर लोकों को पुनः-पुनः प्राप्त होते हैं।

पठितावबोधनकार्यम्–

प्रश्नाः–

(क) एकपदेन उत्तरत—

(i) असुर्याः लोकाः केन आवृताः?

(ii) कीदृशाः लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

आत्महनः जनाः प्रेत्य कान् अभिगच्छन्ति?

(ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत–)

(i) 'आत्महनः' इति विशेषणस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?
(अ) लोकाः (ब) प्रेत्य (स) जनाः (द) असुर्याः

(ii) 'लोकाः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किमस्ति?
(अ) आवृताः (ब) तमसा (स) अभिगच्छन्ति (द) सन्ति

(iii) 'ते प्रेत्य.......।' इत्यत्र 'ते' सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदं किम्?
(अ) लोकाः (ब) असुर्याः (स) तमसा (द) जनाः

(iv) 'अन्धकारेण' इत्यस्य पर्यायपदं पद्यांशात् चित्वा लिखत।
(अ) अन्धेन (ब) तमसा (स) असुर्याः (द) आत्महनः

उत्तराणि—

(क) (i) अन्धेन तमसा। (ii) असुर्याः।

(ख) आत्महनः जनाः प्रेत्य असुर्या नाम लोकान् अभिगच्छन्ति।

(ग) (i) (स) (ii) (अ) (iii) (द) (iv) (ब)।